लेखक-परिचय

फणीश्वरनाथ रेणु
(सन् 1921-1977)

प्रसिद्ध कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म गाँव औराही हिंगना (ज़िला पूर्णिया, बिहार) में हुआ और स्कूली शिक्षा नेपाल में। सन् 1942 के आज़ादी के आंदोलन के प्रमुख सेनानी रहे रेणु ने नेपाल की सशस्त्र क्रांति और राजनीति में भी सक्रिय भागीदारी की।

आंचलिक कथाकार के रूप में विख्यात रेणु ने ग्रामीण जीवन का गहन रागात्मक और रसमय चित्र खींचा है। अपनी विशिष्ट भाषा-शैली द्वारा उन्होंने हिंदी कथा-साहित्य को नया आयाम दिया।

प्रमुख कृतियाँ—**मैला आँचल, परती परिकथा, कितने चौराहे** (उपन्यास); **ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, अगिनखोर** (कहानी-संग्रह); **ऋणजल-धनजल, नेपाली क्रांति कथा** (रिपोर्ताज)।

मृदुला गर्ग
(जन्म सन् 1938)

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर मृदुला गर्ग का जन्म कोलकाता में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. (अर्थशास्त्र) किया। भारत के विभिन्न शहरों में रहने के बाद सन् 1974 से दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन। कथा-साहित्य के अलावा उन्होंने अपने समय और समाज की समस्याओं पर वैचारिक निबंध भी लिखे हैं। मृदुला गर्ग ने कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर गद्य-लेखन की प्रचलित परिपाटी को तोड़ा है।

© NCERT not to be republished

प्रमुख कृतियाँ—**उसके हिस्से की धूप, अनित्य, चित्तकोबरा, कठगुलाब** (उपन्यास); **संगति-विसंगति** (दो खंडों में संपूर्ण कहानियाँ); **रंग-ढंग, चुकते नहीं सवाल** (निबंध-संग्रह)।

जगदीश चंद्र माथुर
(सन् 1917-1978)

सुपरिचित नाटककार जगदीश चंद्र माथुर का जन्म खुर्जा (उत्तर प्रदेश) में हुआ और शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से। बचपन से ही नाटकों में रुचि होने के कारण स्कूल, कॉलेज के सांस्कृतिक उत्सवों में नाट्य लेखन, निर्देशन और अभिनय करते रहे। आगे चलकर यही शौक सृजन में परिणित हो गया।

जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में विविधता है। ऐतिहासिक नाटकों के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक समस्याओं से जुड़े एकांकी-नाटक लिखे हैं। उनके कुछ व्यंग्य प्रधान एकांकी चर्चित रहे हैं।

प्रमुख कृतियाँ—**कोणार्क, दशरथ नंदन, शारदीया, पहला राजा** (नाटक); **भोर का तारा, ओ मेरे सपने** (एकांकी-संग्रह)।

© NCERT not to be republished

टिप्पणी

© NCERT not to be republished